उत्तरपाड़ा भाषण

(अलीपुर जेल से छूटने के बाद श्री अरविन्द का पहला महत्वपूर्ण भाषण 30 मई 1909 को उत्तरपाड़ा में हुआ । इसमें उन्होंने अपने जेल-जीवन का आध्यात्मिक अनुभव सुनाया और साथ ही देश को सच्ची राष्ट्रीयता का संदेश दिया। इसमें उन्होंने बताया है कि सच्चा हिन्दू धर्म, सच्चा सनातन धर्म क्या है ? और आज के संसार को उसकी क्यों जरूरत है ! उनका यह भाषण उनके जीवन में एक नया मोड़ का परिचय देता है।-सं.)

जब मुझे आपकी 'सभा' के इस वार्षिक अधिवेशन में बोलने के लिए कहा गया, तो मैंने यही सोचा था कि आज के लिए जो विषय चुना गया है उसी पर, अर्थात् हिंदू धर्म पर कुछ कहूँगा ।

मैं नहीं जानता था कि उस इच्छा को, मैं पूरा कर सकूंगा या नहीं; क्योंकि जैसे ही मैं यहाँ आकर बैठा, मेरे मन में एक संदेश आया और यह संदेश मुझे आपको और सारे भारत राष्ट्र को सुनाना है। यह वाणी मुझे पहले-पहल जेल में सुनायी दी थी और उसे अपने देशवासियों को सुनाने के लिए, मैं जेल से बाहर आया हूँ।

पिछली बार जब मै यहां आया था उसे एक वर्ष से ऊपर हो चुका है। उस बार मैं अकेला न था; तब मेरे साथ ही बैठे थे

राष्ट्रीयता के एक परम शक्तिमान् दूत। उन दिनों वे उस एकांतवास से लौटकर आये थे जहाँ उन्हे भगवान् ने इसलिए भेजा था कि वे अपनी काल कोठरी की शांति और निर्जनता में उस वाणी को सुन सकें जो उन्हें सुनानी थी । उस समय आप सैकड़ों की संख्या में उन्हीं का स्वागत करने आये थे। आज वे हमसे बहुत दूर हैं, हजारों मील के फासले पर हैं। दूसरे लोग भी, जिन्हें मैं अपने साथ काम करते हुए पाता था, आज अनुपस्थित हैं। देश पर जो तुफान आया था, उसने उन्हें दूर-दूर बिखेर दिया है। इस बार मैं एक वर्ष निर्जनवास में बिताकर आया हूं और अब बाहर आकर देखता हूं कि सब कुछ बदल गया है। जो सदा मेरे साथ बैठते थे, जो सदा मेरे काम मे सहयोग दिया करते थे, आज बर्मा मे कैद है; दूसरे उतर मे नजरबंद होकर सड़ रहे हैं। जब मैं बाहर आया तो मैंने अपने चारों ओर देखा, जिनसे सलाह और प्रेरणा पाने का अभ्यास था उन्हें खोजा । वे मुझे नहीं मिले । इतना ही नहीं, जब मैं जेल गया था तो सारा देश वंदे मातरम् की ध्वनि से गूंज रहा था, वह एक राष्ट बनने की आशा से जीवित था। यह उन करोड़ों मनुष्यों की आशा थी जो गिरी हुई दशा से अभी-अभी ऊपर उठे थे । जब मैं जेल से बाहर आया तो मैंने इस ध्वनि को सुनने की कोशिश की, किंतु इसके स्थान पर छायी हुई थी निस्तब्धता । देश में सन्नाटा था और लोग हक्के-बक्के से दिखाई दिये; क्योंकि जहां पहले हमारे सामने भविष्य की कल्पना से भरा ईश्वर का उज्ज्वल स्वर्ग था वहां हमारे सिर पर धुसर

आकाश दिखाई दिया, जिससे मानवीय वज्र और बिजली की वर्षा हो रही थी। किसी को यह न दिखाई देता था कि किस ओर चलना चाहिए, और चारों ओर से यही प्रश्न उठ रहा था,''अब क्या करें? हम क्या कर सकते हैं?'' मुझे भी पता न था, किस ओर चलना चाहिए और अब क्या किया जा सकता है। लेकिन एक बात मैं जानता था, ईश्वर की जिस महान् शक्ति उस ध्वनि को जगाया था,उस आशा का संचार किया था उसी शक्ति ने यह सन्नाटा भेजा है। जो ईश्वर उस कोलाहल और आंदोलन में थे, वे ही इस विश्राम और निस्तब्धता में भी हैं। ईश्वर ने इसे भेजा है ताकि राष्ट्र क्षणभर के लिए रुककर अपने अंदर खोजें और जानें कि उनकी इच्छा क्या है? इस निस्तब्ध्ता से मैं निरुत्साहित नहीं हुआ हूं, क्योंकि कारागार में इस निस्तब्धता के साथ मेरा परिचय हो चुका है और मैं जानता हूं कि मैंने एक वर्ष की लंबी कैद के विश्राम और निस्तब्धता में ही यह पाठ पढ़ा है। जब विपिनचन्द्र पाल जेल से बाहर आये तो वे एक संदेश लेकर आये थे और वह प्रेरणा से मिला हुआ संदेश था । उन्होंने यहां जो वक्तृता दी थी वह मुझे याद है। उस वक्तृता का मर्म और अभिप्राय उतना राजनीतिक नहीं था जितना धार्मिक था। उन्होंने उस समय जेल के अंदर मिली हुई अनुभूति की, हम सबके अंदर जो भगवान् हैं उनकी, राष्ट्र के अंदर जो परमेश्वर हैं उनकी बात की थी। अपने बाद के व्याख्यानों में भी उन्होंने कहा था कि इस आंदोलन में जो शक्ति काम कर रही है वह सामान्य शक्ति की अपेक्षा महान् है।और

इसका हेतु भी साधारण हेतु से कहीं बढकर है। आज मैं भी आपसे फिर मिल रहा हूं। मै भी जेल से बाहर आया हूं और इस बार भी आप ही,इस उतरपाड़ा के निवासी ही ,मेरा सबसे पहले स्वागत कर रहे हैं। किसी राजनीतिक सभा मे नहीं, बल्कि उस समिति की सभा में जिसका उद्देश्य है धर्म की रक्षा। जो संदेश विपिन चन्द्र पाल ने बक्सर जेल में पाया था वही भगवान् ने मुझे अलीपुर जेल में दिया। वह ज्ञान भगवान् ने मुझे बारह महीने के कारावास में दिन-प्रतिदिन दिया और आदेश दिया है कि अब जब मैं जेल से बाहर आ गया हूं तो आपसे उसकी बात करूं।

मैं जानता था कि मैं जेल से बाहर निकल आऊंगा। यह वर्ष भर की नजरबंदी केवल एक वर्ष के एकांतवास और प्रशिक्षण के लिये थी । भला किसी के लिये यह कैसे संभव होता कि मुझे जेल में उतने दिनों से अधिक रोक रखता जितने दिन भगवान का हेतु सिद्ध करने के लिए आवश्यक थे ? भगवान ने कहने के लिए एक संदेश दिया है। और करने के लिये एक काम, मैं यह जानता था कि जबतक यह संदेश सुना नहीं दिया जाता तबतक कोई मानवशक्ति मुझे चुप नहीं कर सकती, जबतक वह काम नही हो जाता तबतक कोई मानव शक्ति मुझे चुप नहीं कर सकती जब तक वह काम नही हो जाता तबतक कोई मानवशक्ति भगवान् के यंत्र को रोक नही सकती, फिर वह यंत्र चाहे कितना ही दुर्बल, कितना ही सामान्य क्यों नही हो । अब जब कि मैं बाहर आ गया हूं इन चंद मिनटों में ही मुझे एक ऐसी वाणी सुझायी गयी है जिसे

व्यक्त करने की मेरी कोई इच्छा न थी । मेरे मन में जो कुछ था उसे भगवान् ने निकालकर फैंक दिया है और मैं जो कुछ बोल रहा हूँ। वह एक प्रेरणा के वश होकर, बाध्य होकर बोल रहूँ।

जब मुझे गिरफ्तार करके जल्दी-जल्दी लालबाजार की हाजत में पहुँचाया गया तो मेरी श्रद्धा क्षणभर के लिए डिग गयी थी, क्योंकि उस समय मैं भगवान् की इच्छा के मर्म को नहीं जान पाया था । इसलिए मैं क्षणभर के लिए विचलित हो गया और अपने हृदय में भगवान् को पुकारकर कहने लगा "यह क्या हुआ? मेरा यह विश्वास था कि मुझे अपने देशवासियों के लिए विशेष काम करना है। और जबतक वह काम पुरा नहीं हो जाता तबतक तुम मेरी रक्षा करोगे । तब फिर मैं यहां क्यों हूं और वह भी इस प्रकार के अभियोग में ?" एक दिन बीता, दो दिन बीते, तीन दिन बीत गये, तब मेरे अंदर से एक आवाज आयी, "ठहरो और देखो कि क्या होता है। " तब मैं शांत हो गया और प्रतीक्षा करने लगा । मैं लालबाजार थाने से अलीपुर जेल मैं ले जाया गया और वहाँ मुझे एक महीनें के लिए मनुष्यों से दूर एक निर्जन कालकोठरी में रखा गया । वहाँ मैं अपने अंदर विद्यमान भगवान् की वाणी सुनने के लिए, यह जानने के लिए की वे मुझसे क्या कहना चाहते हैं। और यह सीखने के लिए कि मुझे क्या करना होगा, रात-दिन प्रतीक्षा करने लगा । इस एकांतवास में मुझे सबसे पहली अनुभूति हुई, पहली शिक्षा मिली । उस समय मुझे याद आया कि गिरफ्तारी से एक महीना या उससे भी कुछ अधिक पहले मुझे यह आदेश

मिला था कि मैं अपने सारे कर्म छोड़कर एकांत चला जाऊँ और अपने अंदर खोज करूँ ताकि भगवान् के साथ अधिक संपर्क में आ सकूं । मैं दुर्बल था और उस आदेश को स्वीकार न कर सका । मुझे अपना कार्य बहुत प्रिय था और हृदय में इस बात का अभिमान था कि यदि मैं न रहूँ तो इस काम को धक्का पहुँचेगा, इतना ही नही शायद असफल और बंद भी हो जायेगा; इसलिए मुझे काम नहीं छोड़ना चाहिए । ऐसा बोध हुआ कि वे मुझसे फिर बोले और उन्होंने कहा कि, ''जिन बंधनों को तोड़ने की शक्ति तुममें नहीं थी उन्हें तुम्हारे लिए मैंने तोड़ दिया है क्योंकि मेरी यह इच्छा नहीं है और न थी ही कि वे कार्य जारी रहें । तुम्हारे करने के लिए मैंने दूसरा काम चुना है और उसी के लिए मैं तुम्हें यहां लाया हूँ ताकि मैं तुम्हें वह बात सिखा दूँ जिसे तुम स्वयं नहीं सीख सके और तुम्हें अपने काम के लिए तैयार कर लूँ।'' इसके बाद भगवान् ने मेरे हाथों में गीता रख दी । मेरे अंदर उनकी शक्ति प्रवेश कर गयी और मैं गीता की साधना करने में समर्थ हुआ। मुझे केवल बुद्धि द्वारा ही नहीं, बल्कि अनुभूति द्वारा भी जानना था कि श्री कृष्ण की अर्जुन से क्या मांग थी और वे उन लोगों से क्या मांगते हैं। जो उनका कार्य करने की इच्छा रखते हैं, अर्थात् घृणा और कामना-वासना से मुक्त होना होगा, फल की इच्छा न रखकर भगवान् के लिए कर्म करना होगा, अपनी इच्छा का त्याग करना होगा, और निश्चेष्ट तथा सच्चा यंत्र बनकर भगवान् के हाथों में रहना होगा, ऊँच और नीच, मित्र और शत्रु, सफलता और

विफलता के प्रति समदृष्टि रखनी होगी और यह सब होते हुए भी उनके कार्य में कोई अवहेलना न आने पाए । मैंने यह जाना कि हिंदू धर्म का मतलब क्या है। बहुधा हम हिंदू धर्म, सनातन धर्म की बातें करते हैं,किंतु वास्तव में हममें से कम ही लोग यह जानते हैं कि यह धर्म क्या है। दूसरे धर्म मुख्य रूप से विश्वास, व्रत, दीक्षा और मान्यता को महत्व देते हैं, किंतु सनातन धर्म तो स्वयं जीवन है,यह इतनी विश्वास करने की चीज नहीं है जितनी जीवन में उतारने की चीज हैं। यही वह धर्म है जिसे मानव जाति के कल्याण के लिए प्राचीन काल से इस प्रायद्वीप के एकांतवास में संजोया जाता रहा है। यही धर्म देने के लिए भारत उठ रहा हैं। भारतवर्ष, दूसरे देशो की तरह, अपने लिए ही या मजबुत होकर दुसरों को कुचलने के लिये नही उठ रहा। वह उठ रहा है सारे संसार पर वह सनातन ज्योति बिखरने के लिये जो उसे सौंपी गयी है। भारत का जीवन सदा ही मानवजाति के लिये रहा है, उसे अपने लिये नहीं बल्कि मानवजाति के लिये महान् होना है।

अतः भगवान् ने मुझे दुसरी वस्तु दिखायी -उन्होंने मुझे हिन्दू धर्म के मुल सत्य का साक्षात्कार करा दिया । उन्होंने मेरे के दिल को मेरी ओर मोड़ दिया,उन्होंने जेल के प्रधान अग्रेंज अधिकारी से कहा कि ''ये कालकोठरी में बहुत कष्ट पा रहे है; इन्हें कम-से-कम सुबह-शाम आध-आध घंटा कोठरी के बाहर टहलने की अनुमति दे दी जाये।''यह अनुमति मिल गयी और जब मैं टहल रहा था तो भगवान् की शक्ति ने फिर मेरे अंदर प्रवेश किया । मैंने

उस जेल की ओर दृष्टि डाली जो मुझे और लोगों से अलग किये हुए थी । मैंने देखा कि अब मैं उसकी ऊंची दीवारों के अंदर बंदी नहीं हूँ; मुझे घेरे हुए थे वासुदेव । मैं अपनी कालकोठरी के सामने के पेड़ की शाखाओं के नीचे टहल रहा था, परन्तु वहाँ पेड़ न था, मुझे प्रतीत हुआ कि वे वासुदेव हैं; मैंने देखा कि स्वयं श्रीकृष्ण खड़े हैं; और मेरे ऊपर छाया किये हुए हैं । मैंने अपनी कालकोठरी के सींखचों की ओर देखा, उस जाली की ओर देखा जो दरवाजे का काम कर रही थी, वहाँ भी वासुदेव दिखायी दिये । स्वयं नारायण संतरी बनकर पहरा दे रहे थे । जब मैं उन मोटे कंबलों पर लेटा जो मुझे पलंग की जगह मिले थे तो मैंने यह अनुभव किया कि मेरे सखा और प्रेमी श्री कृष्ण मुझे अपनी बाहुओं में लिये हुए हैं। मुझे उन्होंने जो गहरी दृष्टि दी थी उसका यह पहला प्रयोग था । मैंने जेल के कैदियो-चोरों ,हत्यारों और बदमाशो-को देखा और मुझे वासुदेव दिखायी पड़े, उन अंधेरे में पड़ी आत्माओं और बुरी तरह काम में लाये गये शरीरों में मुझे नारायण मिले । उन चोरों और डाकुओं में बहुत से ऐसे थे जिन्होंने अपनी सहानुभति और दया के द्वारा मुझे लज्जित कर दिया, इन विपरीत परिस्थितियों में मानवता विजयी हुई थी। इनमें से एक आदमी को मैंने विशेष रूप से देखा जो मुझे एक संत मालूम हुआ । वह हमारे देश का एक किसान था जो लिखना -पढ़ना नहीं जानता था , जिसे तथाकथित डकैती के अभियोग में दस वर्ष का कठोर दंड मिला था । यह उनमें से एक व्यक्ति था जिन्हे हम वर्ग के

मिथ्याभिमान में आकर ''छोटो लोक '' (नीच) कहा करते हैं। फिर एक बार भगवान् मुझसे बोले, उन्होंने कहा ''अपना कुछ थोड़ा -सा काम करने के लिये मैंने तुम्हें जिनके बीच भेजा है। उन लोगों को देखो। जिस जाति को मैं ऊपर उठा रहा हूँ उसका स्वरूप यही है और इसी कारण मैं उसे ऊपर उठा रहा हूँ।''

जब छोटी अदालत में मुकदमा शुरू हुआ और हम लोग मजिस्ट्रेट के सामने खड़े किये गये तो वहाँ भी मेरी अंतर्दृष्टि मेरे साथ थी । भगवान् ने मुझसे कहा ,''जब तुम जेल में डाले गये थे तो क्या तुम्हारा हृदय हताश नहीं हुआ था,क्या तुमने मुझे पुकार कर यह नही कहा था -कहाँ, तुम्हारी रक्षा कहाँ है ? लो, अब मजिस्ट्रेट की देखो ,सरकारी वकील की ओर देखो। ''मैंने देखा कि अदालत की ओर कुर्सी पर मजिस्ट्रेट नहीं, स्वयं वासुदेव ,नारायण बैठे थे । अब मैंने सरकारी वकील की ओर देखा पर वहाँ कोई सरकारी वकील नहीं दिखायी दिया ,वहाँ तो श्रीकृष्ण बैठे मुस्करा रहे थे ,मेरे सखा ,मेरे प्रेमी । उन्होने कहा,''अब डरते हो ? मैं सभी मनुष्यों में विद्यमान हूँ और उनके सभी कर्मों और शब्दों पर राज करता हूँ। मेरा सरंक्षण अब भी तुम्हारे साथ हैं,और तुम्हे डरना नहीं चाहिये। तुम्हारे विरूद्व जो यह मुकदमा चलाया गया है उसे मेरे हाथों मे सौपं दो।यह तुम्हारे लिये नही हैं।मैं तुम्हें यहां मुकदमें के लिए नही बल्कि किसी औरकाम के लिये लाया हुॅ। यह तो मेरे काम का एक साधन मात्र हैंइससे अधिक कुछ नही। ''इसके बाद जब सेंशन जज की अदालत मे विचार आरंभ हुआ

तो मैं अपने वकील के लिये ऐसी बहुत सी हिदायतें लिखने लगा कि गवाही मे मेरे विरूद्व कही गयी बातो मे से कौन सी बातें गलत है।और किन किन पर गवाहो से जिरह की जा सकती हैं।तब एक ऐसी घटना घटी जिसकी मैं आशा नही करता था । मेरे मुकदमें की पैरवी के लिये जो प्रबंध किया गया था वह एकाएक बदल गया और मेरी सफाई के लिये एक दुसरे ही वकील खड़े हुए। वे अप्रत्याशित रूप से आ गये वे मेरे एक मित्र थे किंतु मैं नही जानता था वे आयेगे । आप सभी ने उनका नाम सुना हैं।जिन्होने मन से सभी विचार निकाल बाहर किये और इस मुकदमे के सिवा सारी वकालत बंद कर दी ,जिन्होने महीनों लगातार आधी आधी रात तक जगकर मुझे बचाने के लिये अपना स्वास्थ्य बिगाड़ लिया वे है श्री चितरंजन दास । जब मैने उन्हे देखा तो मुझे संतोष हुआ फिर भी मैं समझता था कि हिदायतें लिखनी जरूरी हैं। इसके बाद यह विचार भी हटा दिया गया और मेरे अंदर से आवाज आयी ,''यही वह आदमी है जो तुम्हारे पेरौ के चारो ओर फैले जाल से तुम्हे बाहर निकालेगा । तुम इन कागजो को अलग धर दो । इन्हे तुम हिदायते नही दोगे ,मैं दुंगा।''उस समय से इस मुकदमे के संबध मे मैंने अपनी ओर से अपने वकील से एक शब्द भी नही कहा कोई हिदायत नही दी और यदि कभी मुझसे कोई सवाल पुछा गया तो मैंने सदा यही देखा कि मेरे उतर से मुकदमे को कोई मदद नही मिली । मैंने मुकदमा उन्हें सौप दिया और उन्होने पुरी तरह उसे अपने हाथो मे ले लिया और उसका परिणाम

आप जानते ही है। क्योंकि मुझे बार बार यह वाणी सुनायी पड़ती थी मेरे अंदर से सदा यह आवाज आया करती थी ,''मैं रास्ता दिखा रहा हुॅ,इसलिए डरो मत । मैं तुम्हे जिस काम के लिये जेल से बाहर निकलो तो यह याद रखना –कभी डरना मत, कभी हिचकिचाना मत, याद रखो ,यह सब मैं कर रहा हुॅ और कोई नही ।अतः चाहे जितने बादल घिरे ,चाहे जितने खतरे और दुःख कष्ट आये, कठिनाइयाँ हो , चाहे जितनी असभंवताएं आयें,कुछ भी असभंव नही हैं,कुछ भी कठिन नही हैं। मैं इस देश और उसके उत्थान मे हुॅ,मै वासुदेव हुॅ,मैं नारायण हुॅ । जो कुछ मेरी इच्छा होगी वही होगा ,दूसरो की इच्छा से नही । मै जिस चीज को लाना चाहता हूॅ उसे कोई मानव शक्ति रोक नही सकती ।''

इस बीच वे मुझे उस एकांत कालकोठरी से बाहर ले आये और मुझे उन लोगो के साथ रख दिया जिनपर मेरे साथ ही अभियोग चल रहा था ।आज आपने मेरे आत्म –त्याग और देश प्रेम के बारे में बहुत कुछ कहा है। मैं जब से जेल से निकला हुॅतब से इसी प्रकार की बाते सुनता आरहा हूॅ किंतु ऐसी बाते सुनने से मुझे लज्जा आती हैं, मेरे अंदर एक तरह की वेदना होती हैं। क्योंकि मैं अपनी दुर्बलता जानता हूॅ ,मैं अपने दोषो और त्रुटियो का शिकार हूॅ।मैं इन बातो के बारे मे पहले भी अंधा न था और जब मेरे एकांतवास में ये सब की सब मेरे विरूद्व खड़ी हो गयीं तो मैंने इनका पुरी तरह अनुभव किया । तब मुझे मालुम हुआ कि

मनुष्य के नाते मैं दुर्बलताओं का एक ढेर हुॅ ,दोष भरा एक अपूर्ण यंत्र हू ,मुझसे ताकत तभी आती हैजब कोई उच्चतर शक्ति मेरे अंदर आ जाये।अब मैं उन युवको के बीच में आया और मैंने देखा कि उनमें से बहुतो में एक प्रचण्ड साहस और शक्ति हैं। इनमे से एक -दो ऐसे थे जो केवल बल और चरित्र में मुझसे नही थे - ऐसे तो बहुत थे बल्कि मैं जिस बुद्वि की योग्यता का अभिमान रखता था , उसमें भी बढे हुए थे । भगवान् ने मुझसे फिर कहा ,''यही वह युवक -दल ,वह तुमसे अधिक बड़े है। तुम्हे भय किस बात का है ? यदि तुम इस काम से हट जाओ या सो जाओ तो भी काम पूरा होगा । कल तुम इस काम से हटा दिये जाओ तो ये युवक तुम्हारे काम को उठा लेगें और उसे इतने प्रभावशाली ढ़ग से करेगे जैसे तुमने भी नही किया । तुम्हे इस देश को एक वाणी सुनाने के लिये मुझसे कुछ बल मिला है।,यह वाणी इस जाति को ऊपर उठाने मे सहायता देगी ।'' यह वह दुसरी बात थी जो भगवान् ने मुझसे कही ।

इसके बाद अचानक कुछ हुआ । और क्षणभर में मुझे कालकोठरी के एकांत वास में पहुंचा दिया गया । इस एकांतवास में अंदर क्या हुआ यह कहने की प्रेरणा नही हो रही ,बस इतना काफी हैं कि वहां दिन -प्रतिदिन भगवान् ने अपने चमत्कार दिखायें और मुझे हिंदु धर्म के वास्तविक सत्य का साक्षात्कार कराया । पहले मेरे अंदर अनेक प्रकार के संदेह थे । मेरा लालन -पालन इग्लैण्ड में विदेशी भावो और सर्वथा विदेशी वातारण में

हुआ था। एक समय मैं हिंदु धर्म की बहुत –सी बातो को मात्र कल्पना समझता था , यह समझता था , यह समझता था कि इसमें बहुत कुछ केवल स्वप्न ,भ्रम या माया है। परंतु अब दिन –प्रतिदिन मैंने हिंदु धर्म के सत्य को ,अपने मन मे , अपने प्राण मे और अपने शरीर और मेरे सामने ऐसी सब बातें प्रकट होने लगी जिनके बारे मे भौतिक विज्ञान कोई व्याख्ता नही दे सकता ।जब मैं पहले –पहल भगवान् के पास गया तो पुरी तरह ज्ञानी के भाव से भी नही गया था। बहुत दिन हुए ,स्वदेशी –आंदोलन शुरू होने से पहले बड़ोदा मे मैं उनकी ओर बढा था।

उन दिनों जब मैं भगवान् की ओर बढा तो मुझे उन पर जीवंत श्रद्वा न थी । उस समय मेरे अंदर अज्ञेयवादी था , नास्तिक था, संदेहवादी था और मुझे पुरी तरह विश्वास न था कि भगवान् हैं भी ।मै उनकी उपस्थिति का अनुभव नही करता था । फिर भी कोई चीज थी जिसने मुझे वेद के सत्य की ओर ,गीता के सत्य की ओर , हिंदु धर्म के सत्य की ओर आकर्षित किया ।मुझे लगा कि इस योग में कही पर कोई महाशक्ति शाली सत्य अवश्य है, वेदांत पर आधारित इस धर्म मे कोई परम सत्य अवश्य है ।इसलिये जब मैं योग की मुड़ा और योगाभ्यास करके यह जानने का सकंल्प किया कि मेरा सोचना सही है या नही तो मैने उसे इस भाव और इस प्रार्थना से शुरू किया ,''हे भगवान् , यदि तुम हो तो तुम मेरे हदय की बात जानते हो ।तुम जानते हो कि मै मुक्ति नही मांगता , मै ऐसी कोई चीज नही मांगता जो दुसरे मांगा करतें

है। मै केवल इस जाति को ऊपर उठाने की शक्ति मांगता हूँ,मै केवल यह मागंता हुं कि मुझे इस देश के लोगो के लिये , जिनसे मै प्यार करता हूँ जीने और कर्म करने की अनुमति मिले और यह प्रार्थना करता हूँकि मै अपना जीवने उनके लिये लगा सकूँ।'' मैने योगसिद्वि पाने के लिये बहुत दिनो तक प्रयास किया और अंत मे किसी हदतक मुझे मिली भी ,पर जिस बात के लिये मेरी बहुत अधिक इच्छा थी उसके संबध मे मुझे संतोष नही हुआ । तब उस जेल के, उस जेल के ,उस कालकोठरी के एकांत वास में मैंने उसके लिये फिर से प्रार्थना की । मैने कहा ,''मुझे अपना आदेश दो ,मै नही जानता कि कौन -सा काम करूं ।मुझे एक संदेश दो ।'' इस योगयुक्त अवस्था में मुझे दो संदेश मिले । पहला यह था ,''मैंने तुम्हे एक काम सौंपा है और वह है इस जाति के उत्थान मे सहायता देना ।शीघ्र ही वह समय आयेगा जब तुम्हे सजा जब तुम्हे जेल के बाहर जाना होगा ; क्योंकि मै नही चाहता कि इस बार तुम्हे सजा हो या तुम अपना समय , औरो की तरह अपने देश के लिये कष्ट सहते हुए बिताओ । मैने तुम्हे काम के लिये बुलाया है और यही वह आदेश है जो तुमने मांगा था । मैं तुम्हे आदेश देता हूँ कि जाओ और मेरा काम करो ।''दूसरा संदेश आया ,वह इस प्रकार था ,''इस एक वर्ष के एकांत वास में तुम्हे कुछ दिखाया गया है,वह चीज दिखायी गयी है,जिसके बारे मै तुम्हे संदेह था ,वह है हिंदु धर्म का सत्य ।इसी धर्म को मैं संसार के सामने उठा रहा हूँ , यही वह धर्म है जिसे मैने ऋषि-मुनियों और अवतारो के

द्वारा विकसित किया और पूर्ण बनाया है और अब यह धर्म अन्य राष्टो में मेरा काम करने के लिये बढ रहा है। मै अपनी वाणी का प्रसार करने के लिये इस राष्ट को उठा रहा हूॅ।यही वह सनातन धर्म है जिसे तुम पहले सचमुच नही जानते थे , किंतु जिसे अब मैने तुम्हारे सामने प्रकट कर दिया है । तुम्हारे अंदर जो नास्तिकता थी ,जो संदेह था उनका उतर दे दिया है, क्योंकि मैने अंदर और बाहर ,स्थुल और सुक्ष्म , सभी प्रमाण दे दिया गया है और उनसे तुम्हे संतोष हो गया है। जब तुम बाहर निकलो तो सदा राष्ट को यह वाणी सुनाना कि वे सनातन धर्म के उठ रहे है ,वे अपने लिये नही बल्कि संसार के लिये उठ रहे है। मैं उन्हे संसार की सेवा के लिये स्वंतत्रता दे रहा हूॅ। अतएव जब यह कहा जाता है कि भारत वर्ष ऊपर उठेगा तो इसका अर्थ होता है सनातन धर्म महान् होगा । जब यहा कहा जाता है कि भारत वर्ष बढेगा और फैलेगा तो इसका अर्थ होता है सनातन् धर्म बढेगा और संसार पर छा जायेगा । धर्म के लिये और धर्म के द्वारा ही भारत का अस्तित्व है। धर्म की महिमा बढाने का अर्थ है देश की महिमा बढाना । मैने तुम्हे दिखा दिया है कि मैं सब जगह हूं, सभी मनुष्यों और सभी वस्तुओं में हुॅ, मैं इस आंदोलन मे हूं और केवल उन्ही के अंदर कार्य नही कर रहा जो देश के लिये मेहनत कर रहे है बल्कि उनके अंदर भी जो उनका विरोध करते और मार्ग में रोड़े अटकाते है। मै प्रत्येक व्यक्ति के अंदर काम कर रहा हूं और मनुष्य चाहे जो कुछ सोचे या करें ,पर वे मेरे हेतु की सहायता करने के अतिरिक्त और

कुछ नही कर सकते । वे भी मेरा ही काम कर रहे है ;वे मेरे शत्रु नही बल्कि मेरे यंत्र है। तुम यह जाने बिना भी कि तुम किस ओर जा रहे हो ,अपनी सारी क्रियाओं के द्वारा आगे बढ रहे हो । तुम करना चाहते हो कुछ और पर कर बैठते हो कुछ और । तुम एक परिणाम को लक्ष्य बनाते हो और तुम्हारे प्रयास ऐसे हो जाते हैं जो उनसे भिन्न या उल्टा परिणाम लाते है। शक्ति का अर्विभााव हुआ है और उसने लोगो मे प्रवेश किया है। मै एक जमानें से इस उत्थान की तैयारी करता आ रहा हूँ और अब यह समय आ गया है। अब मैं ही इसे पूर्णता की ओर ले जाऊंगा। '' यही वह वाणी है जो आपको सुनानी है । आपकी सभा का नाम है '' धर्म रक्षिणी सभा ''।अस्तु ,धर्म का सरंक्षण ,दुनिया के सामने हिंदुधर्म का सरंक्षण और उत्थान –यही कार्य हमारे सामने है। परंतु हिंदुधर्म क्या है ?वह धर्म क्या है जिसे हम सनातन धर्म कहते है ? वह हिंदुधर्म इसी नाते है कि हिंदु जाति ने इसको रखा है , क्योंकि समुद्र और हिमालय से घिरे हुए इस प्रायद्वीप के एकांतवास में यह फला फुला है , क्योंकि इस पवित्र और प्राचीन भूमि पर इसकी युगोंतक रक्षा करने का भार आर्यजाति को सौंपा गया था। परंतु यह धर्म किसी एक देश की सीमा से घिरा नहीं है , यह संसार के किसी सीमित भाग के साथ विशेष रूप से और सदा के लिये बंधा नही है। जिसे हम हिंदुधर्म कहते है वह वास्तव में सनातन धर्म है,क्योंकि यही वह विश्वव्यापी धर्म हैजो दूसरे सभी धर्मों का आलिंगन करता है । यदि कोई धर्म विश्वव्यापी न हो तो वह सनातन भी नही हो

सकता । कोई संकुचित धर्म ,सांप्रदायिक धर्म, अनुदार धर्म कुछ काल और किसी मर्यादित हेतु के लिये ही रह सकता है। यही एक ऐसा धर्म है जो अपने अंदर सायंस के अविष्कारों और दर्शनशास्त्र के चिंतनो का पूर्वाभास देकर और उन्हे अपने अंदर मिलाकर जड़वाद पर विजय प्राप्त कर सकता है। यही एक धर्म है जो मानवजाति के दिल में यह बात बिठा देता है कि भगवान् हमारे निकट है जिनके द्वारा मनुष्य भगवान् के पास पहुंच सकते हैं।यही एक ऐसा धर्म है जो प्रत्येक क्षण ,सभी धर्मों के माने हुए इस सत्य पर जोर देता है कि भगवान् हर आदमी और हर चीज में हैं तथा हम उन्ही में चलते -फिरते हैं और उन्ही में निवास करते है। यही एक ऐसा धर्म है जो इस सत्य को केवल समझने और उसपर विश्वास करने में हमारा सहायक नहीं होता बल्कि अपनी सता के अंग-अंग में इसका अनुभव करने भी हमारी मदद करता है यही एक धर्म है जो संसार को दिखा देता है कि संसार है वासुदेव की लीला । यही एक ऐसा धर्म है जो हमें यह बताता है कि इस लीला में हम अपनी भूमिका अच्छी से अच्छी तरह कैसे निभा सकते है, जो हमे यह दिखाता है कि इसके सूक्ष्म -से-सूक्ष्म नियम क्या है , जो जीवन की छोटी से छोटी बात को भी धर्म से अलग नही करता ,जो यह जानता है कि अमरता क्या है और जिसने मृत्यु की वास्तविकता को हमारे अंदर से एकदम निकाल दिया है।

यही वह वाणी है जो आपको सुनाने के लिये आज मेरी जबान पर रख दी गयी थी ।मैं जो कुछ कहना चाहता था वह तो

मुझसे अलग कर दिया गया है जो मुझे कहने के दिया गया है उससे अधिक मेरे पास कहने के लिये कुछ नही है । अब वह समाप्त हो चुकी है। पहले भी एक बार जब मेरे अंदर यही शक्ति काम कर रही थी तो मैने आपसे कहाथा कि यह आंदोलन राजनीतिक आंदोलन नही ,बल्कि एक धर्महै , एक विश्वास है ,एक निष्ठा है।उसी बात को आज फिर मैं दोहराता हूॅ, किंतु आज मै उसे दूसरे रूप में उपस्थित कर रहा हूॅ। आज मै उसे दुसरे ही रूप में उपस्थित कर रहा हूॅ। आज मै यह नही कहता हूं कि सनातन धर्म ही हमारे लिये राष्टीयता है। यह हिंदूजाति सनातन धर्म को लेकर पनपती है। जब सनातन धर्म की अवनति होती है तब इस जाति की भी अवनति होती है तब इस जाति की भी अवनति होती है और यदि सनातन धर्म का विनाश सभंव होता तो सनातन धर्म के साथ –ही –साथ इस जाति का भी विनाश हो जाता । सनातन धर्म ही है राष्टीयता। यही वह संदेश है जो मुझे आपको सुनाना है।

.....